इस दिशा मे [illegible] प्रयास किए। सन् [illegible] मे [illegible] के [illegible] विलियम [illegible] ने एक [illegible] कैमरे का निर्माण किया जिसे '[illegible]' के नाम से जाना गया, [illegible] [illegible] आकार के [illegible] और [illegible] के प्रति अधिक थी। वे [illegible] अपने कैमरे को [illegible] सकने के, सन् [illegible] मे फ्रांस की एक डॉक्टर ने [illegible] की [illegible] को जानने के लिए कैमरे का आविष्कार किया। इन छायाकारों के बावजूद इन चित्रों का प्रयोग सिनेमा के रूप मे नहीं हो पा रहा था क्योंकि उन दिनों फोटो मे प्रयुक्त होने वाली शीशे और उनके पॉलिशिंग के किनारों में फिट नहीं होते थे। इसी कारण तस्वीरों को एक निश्चित दूरी से श्रृंखलाबद्ध रूप मे, सिनेमा की तरह प्रदर्शित नहीं किया जा सकता था। धीरे-धीरे यह समस्या भी दूर हुई और सिनेमा अपनी दिशा मे अधिक सृजनात्मक रूप लेने लगा। फ्रांस के कई प्रयोगवादी और सृजनात्मक छायाकारों ने सिनेमा के विकास मे योगदान दिया। लेकिन मुख्यतः फ्रांस के 'लूइस ल्यूमेर' को ही सिनेमा के जन्मदाता के रूप मे मान्यता मिली। सबसे पहले इन्होंने 'लि अरोजेर अरोज' नामक प्रथम कथा फिल्म का निर्माण कर इसे 22 मार्च 1895 को प्रदर्शित करके विश्व-सिनेमा के क्षेत्र मे नई क्रान्ति का सूत्रपात किया। इस फिल्म का निर्माण डेमिनी और लियॉन के 60 मिलीमीटर कैमरे से ही किया गया था। इस फिल्म के प्रति दर्शकों की प्रतिक्रिया को देखकर ल्यूमेर और उसके दोस्तो मे औ अधिक उत्साह जागा। इस प्रकार कैमरे के विकास में इन्होंने कई आविष्क किए जिससे विश्व सिनेमा का स्वरूप और चमकने लगा। इस तरह ल्यूमेर और उनके साथी 'ल्यूमेर ब्रदर्स' के नाम से चर्चित हो गए। विश्व के कई देशों में होता हुआ सिनेमा भारत भी पहुँचा जहाँ 7 जुलाई 189 के दिन मुम्बई के वॉटसन होटल मे ल्यूमेर ब्रदर्स के प्रतिनिधियों द्वारा पह बार एक साथ 6 मूक फिल्में प्रदर्शित की गई। इस प्रदर्शन मे मुम्बई स्थिर फोटो के छायाकार (स्थिर फोटो कैमरे का आगमन भारत मे 1840 मे ो चुका था) हरिश्चन्द्र सखाराम भटवडेकर भी थे। सखाराम भटवडेकर

Scanned by TapScanner